पाठ 1 दिसम्बर 28–जनवरी 3

पढ़ने से समझने तक

सब्त अपराह्न **दिसम्बर 28**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : लूका 24: 25-27; 2पत०3: 11-13; योना 3: 3-10; गिनती 14: 34; दानि०9: 23; 10: 11,12.

याद वचन: *"फिलिप्पुस उसकी ओर दौड़ा और उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और पूछा 'तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?" (प्रेरितों 8: 30)।*

हमारी कलीसिया का जन्म दानिय्येल की पुस्तक के पन्नों के भीतर से हुआ, जो इस त्रिमास के लिए हमारा अध्ययन है। जैसे हम शुरू करते हैं, हमारे अध्ययन में हमारी अगुवाई के लिये निम्न विन्दुओं को नमूना के तौर पर मन में रखना चाहिए।

पहला, हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि जैसा मसीह संपूर्ण बाईबल का केंद्र है, दानिय्येल के जीवन का भी केंद्र है।

दूसरा, दानिय्येल एक तरह से संगठित है जो साहित्यिक सुंदरता को दर्शाता है और हमें इसके प्रमुख केंद्र बिन्दु को समझने में मदद करता है।

तीसरा, हमें शास्त्रीय और ईश्वरीय भविष्यवाणी के बीच भिन्नता को समझने की जरूरत है। यह दानिय्येल एवं दूसरों की भविष्यवाणियों के बीच अंतर करने में हमारी मदद करेगा, यथा यशायाह, आमोस, और यिर्मयाह।

चौथा, जब हम दानिय्येल की समय संबंधी भविष्यवाणियों का अध्ययन करते हैं, हमें समझने की जरूरत है कि दानिय्येल की नबूवतीय रूपरेखा लम्बे समयावधि तक चलती है और वर्ष-दिन सिद्धांतानुसार मापा गया है।

पाँचवाँ, हम जोर देंगे कि दानिय्येल की किताब केवल नबूवतीय जानकारी ही नहीं देती है वरन् हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिये आज गहराई से प्रासंगिक है।

रविवार **दिसम्बर 29**

मसीह दानिय्येल का केंद्र

पढ़ें लूका 24: 25-27; यूहन्ना 5: 39; एवं 2कुरिं० 1: 19,20 किस रीति से मसीह पवित्रशास्त्र का केंद्र है?

इस में कोई प्रश्न नहीं कि यीशु पवित्र शास्त्र का केंद्र है, और वैसा ही

---

* सब्त, जनवरी 4 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

यह दानिय्येल को भी शामिल करता है। उदाहरण के लिये अध्याय 1 दिखलाता है, जौभी कि सीमित और अपूर्ण रूप से कि दानिय्येल का अनुभव मसीह के अनुभव के अनुरूप है जिसने इस पापमय जगत में रहने के लिये स्वर्ग छोड़ा और अंधकार की शक्तियों के साथ मुकाबला किया। इससे बढ़कर, दानिय्येल और उसके साथियों को बेबीलोन की संस्कृति की चुनौतियों का सामना करने के लिये स्वर्ग से मसीह का सा ज्ञान प्रदान किया जाता है। अध्याय 2 अंतिम समय के नरक और स्वर्ग के सिद्धांत के आंकड़े का वर्णन करते हुए यह इंगित करता है कि मसीह का राज्य अंततः दुनिया के सभी राज्यों को बदल देगा। अध्याय 3 आग की भट्टी में मसीह का अपने विश्वस्त सेवकों के साथ चहल-कदमी को प्रकट करता है। अध्याय 4 परमेश्वर द्वारा नबूकदनेस्सर को अपने राज्य से कुछ समय के लिये हटाये जाने को दिखलाता है ताकि राजा को यह एहसास हो सके कि "जगत का प्रभु स्वर्ग ही में है" (दानि० 4:26). यह अभिव्यक्ति कि "जगत का प्रभु स्वर्ग ही में है" हमें याद दिलाती है कि मसीह "मनुष्य के पुत्र" (दानि० 7:13) के तौर पर जैसा दानिय्येल 7 में वर्णित है, राज्य और प्रभुत्व करता है। अध्याय 5 ऐय्याशी और भ्रष्टता की एक रात राजा बेलशस्सर की मृत्यु और बेबीलोन का फारसियों के अधीन होने को दिखलाता है। यह मसीह और उसके दूतों के द्वारा अंतिम समय के बेबीलोन के नाश और शैतान की हार की प्रतिछाया (पूर्वाभास) है। अध्याय 6 महायाजकों द्वारा यीशु के विरुद्ध गलत आरोप की तरह दानिय्येल के खिलाफ साजिश को दिखलाता है। इसके अतिरिक्त, दारा राजा दानिय्येल को बचाने का असफल प्रयास करता है, पिलातुस भी यीशु को बचाने का असफल प्रयास करता है (मत्ती 27:17-24). अध्याय 7 मसीह को मनुष्य के पुत्र के रूप में राज्य को प्राप्त करते हुए और अपने लोगों पर शासन करते हुए चित्रित करता है। अध्याय 8 मसीह को स्वर्गीय पवित्र स्थान में एक याजक के तौर पर वर्णन करता है। अध्याय 9 मसीह को बलि के शिकार के तौर पर चित्रित करता है जिसकी मृत्यु परमेश्वर और उसके लोगों के बीच वाचा की पुनः पुष्टि करती है। अध्याय 10-12 मसीह को प्रधान सेनापति, मीकाएल के तौर पर पेश करते हैं, जो बुराई की ताकतों से युद्ध करता है और परमेश्वर के लोगों को विजय पूर्वक बचाता है और मृत्यु की ताकत से भी छुड़ाता है।

इसलिए यह मान कर चलें कि मसीह दानिय्येल के जीवन का केंद्र है। किताब के प्रत्येक अध्याय में कुछ अनुभव या विचार है जो मसीह को इंगित करता है।

संघर्षों, परीक्षाओं, या महान खुशी के क्षणों में और उन्नति में भी हम हमारे जीवन में मसीह को केंद्र के तौर पर रखना कैसे सीख सकते हैं? यह क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है कि हम ऐसा करते हैं?

सोमवार **दिसम्बर 30**

दानिय्येल की संरचना

दानिय्येल के अरामी अनुभाग की व्यवस्था, दानिय्येल अध्याय 2-7, अग्रांकित संरचना को प्रकट करता है, जो किताब के और उस अनुभाग के केंद्रीय संदेश को सुदृढ़ करने में मदद करता है:

A. नबूकदनेस्सर का चार राज्यों का दर्शन (दानिय्येल 2)
B. परमेश्वर दानिय्येल के मित्रों को आग की भट्टी से बचाता है (दानि०3)
C. नबूकदनेस्सर पर न्याय (दानि० 4)
C. बेलशस्सर पर न्याय (दानि० 5)
B. परमेश्वर दानिय्येल को सिहों की मांद से छुड़ाता है (दानि० 6)
A. दानिय्येल का चार राज्यों का दर्शन (दानि० 7)

इस तरह की साहित्यिक व्यवस्था संरचना के केंद्र में रखकर मुख्य बिन्दु को उजागर करने का कार्य करती है, जिसमें इस मामले में C और C शामिल होते हैं (दानि० 4 एवं 5): परमेश्वर नबूकदनेस्सर को (अस्थायी रूप से) राज्य से पदच्युत करता है और बेलशस्सर को (स्थायी रूप से) अपदस्त करता है। इसलिए, अध्याय 2-7 का जोर पृथ्वी में राजाओं पर परमेश्वर के अधिकार के विषय है जैसा कि वह उन्हें स्थापित करता है और हटाता भी है। संदेश और बिन्दु को स्पष्ट करने के अतिअसरदार तरीकों में से एक है पुनरावृति। उदाहरण के लिये, परमेश्वर फिरौन को मिस्र के तत्कालिक भविष्य के विषय में दो स्वप्न देता है (उत्प० 41:1-7). पहले स्वप्न में सात मोटी गायें सात पतली गायों द्वारा निगल ली जाती हैं। दूसरे स्वप्न में सात स्वास्थ्य अनाज की बालियाँ सात पतली अनाज की बालियों द्वारा निगल ली जाती हैं। दोनों स्वप्नों का अर्थ एक ही होता है: सात वर्षों की समृद्धि के बाद सात वर्षों के लिए तंगहाली होगी।

दानिय्येल की किताब में परमेश्वर भी पुनरावृति का प्रयोग करता है। यहाँ पर चार नबूवतीय चक्र हैं, जो समस्त बुनियादी संरचना की पुनरावृतियाँ हैं। अंत में, यह संरचना परमेश्वर की परम संप्रभुता को हमें दिखलाती है। हालांकि प्रत्येक भविष्यवाणी की रूपरेखा अलग दृष्टिकोण पेश करती है, एक साथ वे एक ही ऐतिहासिक काल को सम्मिलित करती हैं, भविष्यवक्ता के समय से अंत तक का विस्तार जिस प्रकार अग्रलिखित तालिका दिखलाती है:

दानिय्येल 2	दानिय्येल 7	दानिय्येल 8,9	दानिय्येल 10-12
बेबीलोन	बेबीलोन		
मादी-फारसी	मादी-फारसी	मादी-फारसी	मादी-फारसी
यूनान	यूनान	यूनान	यूनान
रोम	रोम	रोम	रोम
परमेश्वर का राज्य स्थापित होता है	स्वर्गीय न्याय जो नई पृथ्वी की ओर अगुवाई करता है	पवित्र स्थान का शुद्धिकरण	मीकाएल उठ-खड़ा होता है

हमारी दीर्घकालिक संभावनाओं के बारे में इन पदस्थलों में क्या आशा है ? दानि० 2:44, भजन 9:7-12, 2पत० 3:11-13.

मंगलवार **दिसम्बर 31**

दानिय्येल में ईश्वरीय भविष्यवाणियाँ

भविष्यवाणी के दर्शन जिनका रिकार्ड दानिय्येल की किताब में किया गया है, पुराने नियम के अन्य भविष्यवक्ताओं द्वारा कही गई अधिकांश बातों से स्वभाव में भिन्न है। दानिय्येल की भविष्यवाणियों को ईश्वरीय भविष्यवाणी की श्रेणी में रखा जा सकता है जबकि अधिकांश पुराने नियम की भविष्यवाणियों को शास्त्रीय भविष्यवाणी की श्रेणी में रखा जा सकता है। इन भविष्यवाणी की शैली के बीच में मूल भिन्नता की एक समझ बाईबलीय भविष्यवाणी की एक सही समझ के लिये महत्त्वपूर्ण है।

ईश्वरीय भविष्यवाणियाँ कुछ अद्‌भुत विशेषताओं को दिखलाती हैं जो उन्हें शास्त्रीय भविष्यवाणियों से अलग करती है:

दर्शन और स्वप्न:- ईश्वरीय भविष्यवाणी में परमेश्वर भविष्यवक्ताओं को अपना संवाद मुख्य रूप से दर्शन और स्वप्न के माध्यम से बतलाता है। शास्त्रीय भविष्यवाणी में, भविष्यवक्ता "परमेश्वर के वचन" को प्राप्त करते हैं (जिसमें दर्शन भी शामिल हो सकता है), एक अभिव्यक्ति जो शास्त्रीय भविष्यवक्ताओं में 1600 समयों के विषय में हलकी तबदीली के साथ घटित होती है।

संयुक्त प्रतीकवाद:- जबकि शास्त्रीय भविष्यवाणी में प्रतीकवाद सीमित

मात्रा में है, खास कर उन संकेतों को सम्मिलित करते हैं जो जीवन के साथ सत्य हैं; ईश्वरीय भविष्यवाणी में, परमेश्वर मानव वास्तविकता के संसार के पार संकेतों और कल्पनाओं को दिखलाता है, जैसे दोगले (हईब्रिड) जानवरों या राक्षसों को पंखों और सींगों के साथ दिखलाना।

ईश्वरीय संप्रभुता और शर्त रहितः शास्त्रीय भविष्यवाणियों के विपरीत, जिन का पूरा होना अकसर इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा के संदर्भ में मानव प्रतिक्रिया पर निर्भर है, ईश्वरीय भविष्यवाणियाँ शर्त रहित हैं। ईश्वरीय भविष्यवाणी में परमेश्वर दानिय्येल के समय से अंतिम समय तक संसार के राज्यों के उत्थान और पत्तन को प्रकट करता है। इस प्रकार की भविष्यवाणी परमेश्वर के पूर्वज्ञान और संप्रभुता पर आधारित है और मनुष्य के चुनाव से बेखबर पूरी होगी।

पढ़ें योना 3:3-10 क्या यह शास्त्रीय या ईश्वरीय भविष्यवाणी है? अपने उत्तर की पुष्टि करें। दानिय्येल 7:6 के विषय में क्या है?

व्यापक भविष्यवाणी की शैली के विषय जानना, जैसे शास्त्रीय एवं ईश्वरीय भविष्यवाणी, बहुत लाभदायक हो सकता है। पहला, ये शैली दिखलाती हैं कि परमेश्वर भविष्यवाणी की सच्चाई को बतलाने के लिये भिन्न-भिन्न तरीकों को व्यवहार करता है (इब्रा० 1:1). दूसरा, ऐसा ज्ञान बाईबल की जटिलता और सुन्दरता को बेहतर ढंग से प्रशंसा करने में हमारी मदद करता है। तीसरा, यह ज्ञान बाईबल की भविष्यवाणियों को व्याख्या करने में भी हमारी मदद करता है जो संपूर्ण बाईबल के बयान के साथ संगत है और उचित रीति से "सत्य के वचन" (2तीमु० 2:15) का विश्लेषण करता है।

होशे 3:4, 5; आमोस 8:11; जकर्याह 9:1; एवं 14:4 के अनुच्छेदों के आधार पर कुछ मसीही आज मध्यपूर्व में संसार के इतिहास की अंतिम घटनाओं के तौर पर उम्मीद करते हैं। इस रूपांतरण में क्या गलत है? किस प्रकार ईश्वरीय एवं शास्त्रीय भविष्यवाणियों के बीच फर्क को जानना इस विषय को स्पष्ट करने में हमारी मदद कर सकता है?

बुधवार **जनवरी 1**

परमेश्वर का समय-माप

दूसरा महत्त्वपूर्ण विचार कि जब हम दानिय्येल की किताब का अध्ययन करते हैं हमें ईश्वरीय भविष्यवाणियों के प्रति ऐतिहासिक पहुँच को भी याद

रखने की जरूरत है। यह पहुँच जो इतिहासवाद भी कहा जाता है, बेहतर तरीके से समझा जा सकता है यदि भूतकाल भविष्यवाद, और आदर्शवाद के विरोधी विचारों के साथ तुलना किया जाये।

भूतकाल का चलन है पूर्व में हुई घटना के रूप में दानिय्येल में घोषित भविष्यवाणियों को देखना। भविष्यवाद तर्क पेश करता है कि ये भविष्यवाणियाँ भविष्य में पूर्ण होने का इंतजार कर रही हैं।

आदर्शवाद, बदले में, अधिकार रखता है कि ईश्वरीय भविष्यवाणियाँ वगैर किसी विशिष्ट ऐतिहासिक मार्ग दर्शन के सामान्य आत्मिक वास्तविकताओं के संकेत हैं।

इतिहासवाद, इसके विपरीत अधिकार रखता है कि ईश्वरीय भविष्यवाणी में परमेश्वर भविष्यद्वक्ता के समय से लेकर अंत तक के इतिहास के एक अटूट क्रम को प्रकट करता है। जैसा हम दानिय्येल की किताब का अध्ययन करते हैं, हम देखेंगे कि किताब में प्रत्येक मुख्य दर्शन (दानि०2, 7,8,11) नये विस्तार के साथ और भिन्न-भिन्न परिदृश्य से इस ऐतिहासिक रूपरेखा को दुहराता है। एलेन जी०ह्वाईट को शामिल करते हुए ऐडवेंटिस्ट अगुवे दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की बाईबलीय भविष्यवाणियों को ऐतिहासिक परिदृश्य से समझ चुके थे।

पढ़ें गिनती 14:34 एवं यहेज० 4:5,6 भविष्यवाणी की भाषा में "दिन" किस चीज को पेश करता है ?

जब हम दानिय्येल की किताब का अध्ययन करते हैं, हमें यह भी याद रखना चाहिए कि भविष्यवाणी का काल वर्ष दिन के सिद्धांतानुसार मापा जाता है। अर्थात् भविष्यवाणी में एक दिन बराबर वास्तविक ऐतिहासिक काल में एक वर्ष होता है। इस प्रकार, उदाहरण के लिये, 2,300 सांझ और सबेरे की भविष्यवाणी 2,300 वर्षों के रूप में समझा जाना चाहिए (दानि० 8:14). इसी प्रकार 70 सप्ताहों की भविष्यवाणियाँ 490 वर्षों के तौर पर समझा जाना चाहिए (दानि० 9:24-27).

यह समय-माप कुछ स्पष्ट कारणों के लिये सही लगता है: (1) क्योंकि दर्शन संकेतिक हैं, समय जिन्हें इशारा किया गया है संकेतिक होने चाहिए। (2) जैसा कि दर्शनों में घटनाएँ चित्रित हैं लम्बी समयावधि में प्रकट होती हैं, किस-किस मामलों में "अंतिम समय में", इन भविष्यवाणियों से संबद्ध समयावधियों का तदनुसार व्याख्या किया जाना चाहिए। (3) वर्ष दिन के सिद्धांत दानिय्येल की किताब द्वारा पुष्टि किये जाते हैं। एक स्पष्ट उदाहरण 70-सप्ताह की भविष्यवाणी से आता है, जिसका विस्तार राजा अर्थक्षेत्र के

दिनों से यीशु का मसीहा के तौर पर आने तक होता है। अत: भविष्यवाणी की समयावधि को समझने का अति स्पष्ट और सही तरीका जो दानिय्येल की किताब में दिया गया है वह वर्ष-दिन के सिद्धांतानुसार व्याख्या करना है।

समय की भविष्यवाणियों में से कुछ सैकड़ों, हजारों वर्षों को सम्मिलित करती हैं। धैर्य के विषय में इनसे हमें क्या सीख लेनी चाहिए ?

बृहस्पतिवार **जनवरी 2**

दानिय्येल की सामयिक प्रासंगिकता

दानिय्येल की किताब हालाँकि 2,500 वर्ष पूर्व लिखी गई थी आज भी इस इक्कीसवीं सदी में परमेश्वर के लोगों के लिये प्रासंगिक है। हम तीन क्षेत्रों को ध्यान देंगे जिसमें दानिय्येल हमारे लिये प्रासंगिक हो सकता है।

परमेश्वर हमारे जीवन पर प्रभुता रखता है– चीजें अनुकूल न रहने पर भी परमेश्वर प्रभुता करता है और अपनी संतान के लिये बेहतर करता है। बेबीलोन में दानिय्येल का अनुभव मिस्र में यूसुफ और फारस में एस्थेर के अनुभव के समान है। ये तीनों युवा लोग परदेशी होकर मूर्तिपूजक देश में बंधुवाई में लिये गये थे। संयोग से देखने वाले के लिये वे कमजोर और परमेश्वर द्वारा त्यागे गये लग रहे थे। यद्यपि परमेश्वर ने उन्हें शक्ति दी और सशक्त रूप से इस्तेमाल किया। जब हम परीक्षाओं, पीड़ाओं, और विरोध का सामना करते हैं, हम पीछे मुड़कर देख सकते हैं कि परमेश्वर ने दानिय्येल, यूसुफ, और एस्थेर के साथ क्या किया। हम आश्वस्त हो सकते हैं कि प्रभु हमारा यहोवा है, और उसने हमें हमारी परीक्षाओं और प्रलोभनों में छोड़ा नहीं है।

परमेश्वर इतिहास का मार्ग प्रशस्त करता है– कभी-कभी हम भ्रम और दिशाहीन संसार के द्वारा आफ़त में पड़ जाते हैं। परन्तु दानिय्येल का संवाद है कि परमेश्वर हमें नियंत्रण में रखता है। दानिय्येल के प्रत्येक अध्याय में संदेश घर-घर अंकित है कि परमेश्वर इतिहास के बहाव का मार्ग प्रशस्त करता है। जैसा एलेन जी० ह्वाईट कहती है: "मानव इतिहास के वार्षिक वृतान्त में राष्ट्रों का विकास, साम्राज्यों का उदय और पत्तन, प्रतीत होता है कि यह मानव इच्छा और कौशल पर निर्भर है। घटनाओं की रूपरेखा बहुत हद तक उसकी शक्ति, आकांक्षा, अथवा मौज-मस्ती द्वारा निर्धारित होता है। लेकिन परमेश्वर के वचन में पर्दा एक ओर खींचा जाता है, और हम मानव हितों और शक्ति और जुनून के सभी नाटक और जवाब नाटक के माध्यम से, ऊपर, और पीछे देखते हैं, दयालु परमेश्वर की सभी एजेंसियाँ चुपचाप, धैर्य से अपनी मर्जी की सलाह पर कार्य कर रहे हैं।"– Education, P. 173.

परमेश्वर अपने अंतिम समय के लोगों के लिये एक नमूना पेश करता है– दानिय्येल और उसके मित्र एक समाज में, जीवन के लिये नमूना पेश करते है, जो अकसर बाधाओं पर एक विश्वदृष्टि रखता है, जैसा बाईबल में है। जब उनके विश्वास से समझौता करने और उन क्षेत्रों में बेबीलोन की व्यवस्था को रियायत देने के लिये दबाव डाला गया जो प्रभु के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को अस्वीकार करता, वे परमेश्वर के वचन के प्रति वफादार रहे। उनकी वफ़ादारी (विश्वसनीयता) का अनुभव और प्रभु के प्रति पूर्ण सुपुर्दगी प्रोत्साहित करता है जब हम सुसमाचार के खातिर विरोध और उत्पीड़न का सामना करते हैं। इसी समय दानिय्येल दिखलाता है कि राज्य और समाज के लिये योगदान और प्रभु में समर्पित रहना संभव है।

पढ़ें दानिय्येल 9: 23; 10: 11,12; एवं मत्ती 10: 29-31। हमारे व्यक्तिगत संघर्षों में परमेश्वर की रुचि के विषय में ये पदस्थल क्या कहते हैं?

शुक्रवार **अक्टूबर 4**

अतिरिक्त विचार: "बाईबल को उन सभी के लिए मार्गदर्शक बनने के लिए रचा गया था जो अपने सृष्टिकर्ता की इच्छा से परिचित होना चाहते हैं। परमेश्वर ने मनुष्य को भविष्यवाणी का निश्चित वचन दिया; स्वर्ग दूतों और स्वयं मसीह ने दानिय्येल और यूहन्ना के पास आकर जल्द होने वाली घटनाओं के बारे में जानकारी दी। हमारे उद्धार से संबंधित महत्त्वपूर्ण बातें रहस्य नहीं रह गई थीं वे इस रीति से नहीं बतलायी गईं कि सत्य का एक सच्चा खोजी व्याकुल और गुमराह हो जाए। हब्बकूक नबी के द्वारा यहोवा कहता है: 'दर्शन की बातें लिख दे; ..... कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पढ़ी जाएँ' हब्बकूक 2: 2 परमेश्वर का वचन उन सबके लिये स्पष्ट है जो इसे प्रार्थना पूर्ण हृदय से अध्ययन करते हैं। हर सच्ची ईमानदार आत्मा सच्चाई के प्रकाश में आएगी। 'धर्मी के लिए प्रकाश बोया जाता है।" भजन 97: 11 कोई भी कलीसिया पवित्रता में आगे नहीं बढ़ सकती है जब तक कि उसके सदस्य सच्चाई के रूप में खजाने की तलाश ईमानदारी से नहीं करते हैं।"–Ellen G. White, The Great Controversy, pp. 52/,522.

"दानिय्येल और उसके मित्रों के इतिहास का अध्ययन करें। वे जहाँ कहीं भी थे, हर तरफ प्रलोभन से स्वयं को आसक्त होने का खतरा था, तथापि उन्होंने दैनिक जीवन में परमेश्वर का सम्मान और महिमा की। उन्होंने सभी बुराई से दूर होने का प्रण किया। उन्होंने स्वयं को शत्रु के रास्ते पर होने से मना किया। और परमेश्वर ने उनकी दृढ़निष्ठा को बहुतायत की आशिष से पुरस्कृत

किया।"– Ellen G. White, Manuscript Releases (No.224), pp. 169,170.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्नः

1. जैसे हम दानिय्येल की किताब का अध्ययन करते हैं एक सशक्त बिंदु आयेगा। परमेश्वर समस्त राष्ट्रों पर प्रभुता ही नहीं करता वरन वह हम सबसे घनिष्टता से परिचित है। उदाहरण के लिये, जैसे हम दानिय्येल 2 अध्याय को देखेंगे, वह एक मूर्तिपूजक राजा को भी एक स्वप्न दे सकता था। किसी के मन में निरोपित करना जब वह सो रहा हो और उसके मन की बात को भेद लेना एक निकटता को प्रकट करता है। जिसकी गहराई की थाह भी हम ले नहीं सकते हैं। इसी समय जैसे हम देखेंगे, स्वप्न की प्रकृति प्रकट करती है कि परमेश्वर संसार के विस्तृत साम्राज्यों पर आखिरकार प्रभुता करता है और जानता है कि किस प्रकार प्रत्येक चीज का अंत होता है। वास्तविकता के इस वर्णन से हम कौन-सी उम्मीद और सांत्वना पाते हैं? इसी वक्त, यह आप को कैसे एहसास दिलाता है कि यहोवा इतना निकट है कि वह आपके विचारों को जानता है। इस प्रसंग में, क्रूस की प्रतिज्ञा क्यों इतनी महत्त्वपूर्ण हो जाती है?

2. कक्षा में, शास्त्रीय एवं ईश्वरीय भविष्यवाणी के बीच भिन्नता पर चर्चा करें। बाईबल में दोनों के कौन से दूसरे उदाहरण आप पा सकते हैं?